बिना सिर वाला शैतान

(पुस्तक के कुछ अंश)

बात उस समय की है जब शहर से दूर गांव में ज्यादा मनोरंजन के साधन नहीं हुआ करते थे। तब गांव में हर किसी के यहां टेलीविजन या कंप्यूटर जैसे उपकरण नहीं होते थे। आंखमिचौली,गिल्ली डंडा, छिपम छिपाई,कंचे,कबड्डी,खौ खौ, छुआ छूत इत्यादि खेलों का वर्चस्व हुआ करता था। ग्रामीण लोगों को उस वक़्त रेडियो पर क्रिकेट मैच का ज्यादा लुत्फ आता था। तब लोगों के पास एक दूसरे से बात करने के लिए वक़्त भी होते थे और हर जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए दिल मे भाव भी होता था। उस वक़्त दूर-दूर तक लोग अधिकतर बैलगाड़ीयों से ही सफलतापूर्वक यात्राएँ कर लेते थे।

मेरा नाम हृदान भगत है। मेरी उम्र 17 वर्ष है और मेरे गाँव का नाम कालिकापुर है। जो कि बंगाल में सिल्लीगुड़ी से 67 की.मी. की दूरी पर था। आगे............

बात उस समय की है जब शहर से दूर गांव में ज्यादा मनोरंजन के साधन नहीं हूआ करते थे। तब गांव में हर किसी के यहां टेलीविजन या कंप्यूटर जैसे उपकरण नहीं होते थे। आंखमिचौली,गिल्ली डंडा, छिपम छिपाई,कंचे,कबड्डी,खौ खौ, छुआ छूत इत्यादि खेलों का वर्चस्व हूआ करता था। ग्रामीण लोगों को उस वक़्त रेडियो पर क्रिकेट मैच का ज्यादा लुत्फ आता था। तब लोगों के पास एक दूसरे से बात करने के लिए वक़्त भी होते थे और हर जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए दिल मे भाव भी होता था। उस वक़्त दूर-दूर तक लोग अधिकतर बैलगाड़ीयों से ही सफलतापूर्वक यात्राएँ कर लेते थे।

मेरा नाम हृदान भगत है। मेरी उम्र 17 वर्ष है और मेरे गाँव का नाम कालिकापुर है। जो कि बंगाल में सिल्लीगुड़ी से 67 की.मी. की दूरी पर था। सिल्लीगुड़ी में ही हमारा एक और घर था जहां मेरे चाचा चतुर्भुज भगत अपने छोटे से परिवार के साथ रहते थे। उनका एक बेटा भी था जिसका नाम हर्षित था। हालांकि हर्षित मुझ से एक वर्ष छोटा था लेकिन वो "रोज माउंट वैली स्कूल" में मेरे साथ ही कक्षा 11 में पढ़ता था।

मेरा गांव शहर से इतनी दूर होने के कारण वहां की चकाचौंध दुनिया से अलग थी। उन दिनों गांव में हर किस्म के पेड़ पाए जाते थे और सड़क के दोनों तरफ शीशम के पेड़ कदम से कदम मिला कर सड़क के साथ प्रहरी की भांति खड़े रहते थे। उस वक़्त आसाम और बंगाल अपने काले जादू के लिए मशहूर हूआ करता था। लगभग हर गांव में भूत, प्रेत,जिन्न और चुड़ैलों के किस्से प्रचलित रहते थे। स्थानीय ओझा भी मुर्गे की बली देकर लोगो को झांसे में डालकर मोटी कमाई वसूल करने में पीछे नहीं रहते थे। मेरा गांव कालिकापुर बंगाल के ही सिल्लीगुड़ी जिले के ही अंतर्गत आता था।

हमारे विद्यालय में गर्मियों का लगभग एक महीने का अवकाश हूआ। मेरे चाचा हम सभी को ले कर अपने पुस्तैनी गाँव कालिकापुर आ गए। इस वक्त आम की ऋतु चल रही था। हमलोग पके हूए आमों का मजा ले रहे थे। मैंने आम खाते खाते कहा- "आम बहुत ही स्वादिष्ट हैं। मजा आ गया खा कर। ऐसे आम शहर में क्यों नहीं मिलते चाचा?"

"बेटे ये स्वादिष्ट इसलिए हैं क्योंकि ये पेड़ के पके हुए हैं। शहर के लोग बेहद कम मूल्यों में गाँव से कच्चे आम ले जाकर, इनमें रासायनिक पदार्थों को साथ मिला कर इन्हें पकने के लिए छोड़ देते हैं और इन्हें ऊंचे मूल्यों में बेचकर अच्छा मुनाफा पा लेते हैं।" चाचा ने सहज भाव से मेरे प्रश्न का उत्तर दिया था।

" क्या कहा आपने? रासायनिक पदार्थों का उपयोग करते हैं?

फिर तो इस से उस फल को खाने वाले का नुकसान भी होता होगा?" मैंने उनके जवाब देते ही दूसरा प्रश्न कर दिया था।

"बिल्कुल सही, उन रासायनिक पदार्थों के प्रयोग से पकाए हुए फल खाने से हमारे शरीर पर इसका बड़ा ही प्रतिकूल असर पड़ता है।" चाचा ने इसी तरह मेरे उत्सुकता से पूछे गए सारे प्रश्नो का सही जवाब दिया।

शाम के 6 बजे का वक़्त हो रहा था। मैं हर्षित के साथ सड़क की तरफ चला गया वहां जाने का मुख्य कारण समोसे की लालच थी।

पड़ोस के गांव घरवासडीह से एक समोसे बनाने वाला अपनी ठेली ले कर आता था। वो एक-एक दिन के अंतराल पर आता था। उसके समोसे बेहद ही लजीज होते थे। वो समोसे की चटनी में पुदीना और धनिया के साथ कुछ जादू सा घोल कर बनाता था, जिससे समोसे के साथ खाने में समोसे के जायके को बढ़ा देता था। सबसे बड़ी बात की एक तो उसके समोसे लजीज होते थे और दूसरी की वो पैसे भी कम ही लेता था। 1 ₹ में एक समोसा देता था। सिल्लीगुड़ी में तो एक समोसा 5 ₹ के मिलते थे और ऊपर से चटनी तभी मिलती थी जब समोसे एक से अधिक लें।

मुझे और हर्षित को दादाजी से एक-एक रुपए मिले थे। हम दोनों समोसे का आनन्द ले रहे थे तभी आदित्य भी आ गया। आदित्य हमारे गांव के मुखिया श्याम नारायण का बेटा है जो की हमारे गांव से 5 की.मी. की दूरी पर नासरीगंज में एक स्कूल में पढ़ता था। वो कक्षा 10 में था। मैं और हर्षित हर साल गर्मियों की छुट्टियां में अपने गांव आते थे और हम तीनों मिलकर पूरे गांव में धुमाचौकड़ी मचाते थे। बात जब दोस्ती तक हो तब तो सही है लेकिन मेरे हर्षित के दिमाग मे

यह चल रहा था कि अपने समोसे की बलिदानी कौन दे क्योकिं हम घर से बस 2 ₹ ही ले कर आये थे, जिस से केवल 2 समोसे ही मिले थे। शायद आदित्य मेरे मन मे चल रहे समोसे की बंटवारे की बात को समझ गया और वो समोसे वाले भईया से बोला-" भईया मुझे भी एक समोसे देना।" उसकी इस बात को सुनकर हम तीनों एक साथ हंस पड़े। हमलोगों ने समोसे का आनंद लिया और घर की तरफ जाने लगे। अभी कुछ दूर चले ही थे कि हर्षित बोला-" अरे मैं तो पूछना ही भूल गया! आज रामलीला देखने चलोगे न?"

"अरे इस वर्ष गांव में रामलीला नहीं हो रही है।" आदित्य ने उदास होकर कहा।

मैं बोला-"क्या बात कर रहे हो प्रत्येक वर्ष तो इसका आयोजन होता था। भला ऐसी क्या बात हो गई जो...."

मेरी बातों को बीच मे काटते हुए आदित्य बोला-" हमारे गांव में कुछ दिन पहले ही दो गुटों में झगड़ा हो गया था। बात इतनी बढ़ी की गोलियां चल गई। गोली चलने से जो व्यक्ति बीच बचाव करने आये थे उनके दाहिनी भुजा में लग गई। जिनकी भुजा में गोली लगी वहीं प्रत्येक वर्ष हमारे गांव में रामलीला आयोजन करते थे।"

आदित्य की बातें सुनकर हम लोग उदास हो गए। तभी आदित्य की आंखों में चमक उभरी और बोला-" क्यों न हम पड़ोस के गांव घरवासडीह में जा कर रामलीला देखें।"

आदित्य की बातें सुनकर हर्षित बोला- "वो तो दूर है। वहां उतनी दूर...." हर्षित की बाते पूरी करने से पहले ही आदित्य फिर बीच मे बोल पड़ा-" क्या बात करते हो? हमारे गांव से मात्र ढाई किलोमीटर की दूरी पर ही तो है और हम अब बच्चे नहीं रह गए हैं।"

उसकी इस बातों ने हम लोगो मे जोश भर दिया और हम तीनों ने रात को खाने के बाद 8 बजे घरवासडीह जाने की योजना बनाई।

हम तीनों खाना खाने के बाद घर मे बता कर घरवासडीह रामलीला देखने निकल पड़े। हम लोगो को रात को बाहर जाता देख कर हमारे साथ साथ हमारा कुत्ता जैकी भी चल दिया। आज चांदनी रात में गांव बड़ा ही प्यारा लग रहा था। हवाओ के चलने से पेड़ से पतों की आवाज रोमांचित कर रही थी। हम तीनों एक साथ कदम से कदम मिला कर रामलीला देखने की ललक आंखों में लिए चल रहे थे। थोड़ी देर रात करीब पौने नौ बजे तक हमलोग घरवासडीह पहुँच गए।

"ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम अनुकूल,

तत्व प्रभांव बड़वानलहिं जारि सकल खलु तूल।"

'हे प्रभु आप जिस पर प्रशन्न हों उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। आप प्रभावसे रुई (जो स्वयं बहुत जल्दी जल जाने वाली वस्तु है) बड़वानवाले को निश्चित ही जला सकती है। (अर्थात असंभव को भी सम्भव हो सकता है)

मंच पर यह कथा संवाद चल रहा था। हमलोग भी शान्ति से बैठ कर रामलीला का आनन्द लेने लगे। करीब डेढ़ घंटे देखने के बाद पाँचवे दिन का अध्याय समाप्त हूआ। जैसे ही आज का अध्याय समाप्त हूआ तो मैंने कहा-"वह मजा आ गया, अभी तो नौ दिन का और अध्याय बाकी है। अब हमलोग प्रतिदिन आएंगे।" मेरे ऐसा कहने पर सभी ने हामी भर दी। हमलोग भी 10 बजे के कारीब घर आ कर सो गए।

अगले दिन मैंने घरवालों को ने कल के भाग के बारे में बताया कि कितना मजा आया और शाम होने का इंतजार करने लगा।

शाम होते ही मैंने और हर्षित ने खाना जल्दी निपटाया। हमारे खाना खाते ही आदित्य भी पहूँच चुका था और वो जैकी के साथ रामलीला देखने जाने का इंतजार कर रहा था। हम तीनों अपनी मंजिल की तरफ निकल पड़ें और हमारे साथ जैकी भी हमारे साथ चलते चलते कभी आगे तो कभी पीछे होता हुआ चल रहा था।

आज अमावस की काली रात थी। चारो ओर घना अंधेरा पसरा हूआ था। सड़क पर चलने पर दिक्कत हो रही थी। वो तो शुक्र था कि मुखिया का बेटे आदित्य अपने साथ टार्च ले कर आया था। हमलोग एक साथ हाथ पकड़ कर चल रहे थे की अचनाक हर्षित बोला-" यार आज हमें नहीं आना चाहिए था। आज मुझे कुछ आजीब सा लग रहा है।"

उसकी बातों को सुनकर आदित्य बोला-" सच कहूं तो मेरा भी मन नही था। एक तो अमावस की काली रात है और ऊपर से इतना घना सन्नाटा।" मैं काफी देर से उन दोनों की बातें सुन रहा था।

जब मुझसे न रह गया तो बोला-" कैसी बच्चों जैसी बातें कर रहे हो? भूत वुत कुछ नहीं होता। ये सब मन का वहम होता है।" अभी मैं यह सब कह ही रह था कि मुझे कुछ दूर पर कोई इंसान दिखा जो कि कुछ दूरी पर रास्ते के किनारे खड़ा था। उसे देखकर लग रहा था जैसे हमलोगों का ही इंतजार कर रहा हो। मैंने जैसे ही उनके कन्धे पर हाथ रख कर उस तरफ इशारा किया तो वो दोनों अपने ही जगह पर खड़े हो गए। हम तीनों में से कोई कुछ नहीं बोल पा रहा था। हमारा कुत्ता जैकी जो काफी देर से हमलोगों के साथ चल रहा था वो अब कहीं नहीं दिख रहा था। जैकी को आस पास न दिखने से हम लोग और भी सहम गए। हिम्मत जुटाकर के हमलोग एक साथ आगे बढ़ कर उस व्यक्ति के नजदीक पहुँचे ही थे कि वो सख्स बिल्कुल हमारे सामने खड़ा हो गया। उस शख्स ने सफेद साड़ी पहनी हुई थी और उसने अपना चेहरा लम्बी लम्बी बालों से ढक रखा था। उसके जिस्म से मनमोहक खुशबू आ रही थी। उस खुशबू के सामने सोचने समझने की शक्ति बेकाबू हो रही थी।

उसके व्यक्तित्व को देखकर यह तो पता लग गया था कि जिसे हम अनजान शख्स समझ रहे थे वो कोई रहस्मयी औरत है। उसके अचनाक सामने खड़े होते देख आदित्य पूछ पड़ा-"आप इतनी रात यहां सुनसान जगह अकेले क्या कर रही हो?"

"यह सवाल तो मैं भी तुमलोगो से कर सकती हूँ।" उस रहस्मयी औरत ने सपाट स्वर में कहा।

आदित्य उसके लिए तैयार नहीं था और सकपका कर रह गया।

" नहीं...नहीं आपको परेशान करने का मेरा कोई मतलब नहीं था, वो तो मैं यहाँ......" आदित्य ने घबराते हुए कहा।

"चले जाओ यहां से....तुम जिस काम के लिए जा रहे हो उसका अंजाम सही नहीं होगा।" इस बार उस रहस्यमयी औरत ने ऊँचे आवाज में कहा था।

"ले...लेकिन हमलोग तो रामलीला देखने जा रहे हैं। भला उससे किसी को क्या तकलीफ हो सकती है।" इस बार मैंने हिम्मत जुटा कर उस रहस्मयी औरत से सवाल किया था।

"क्या तुम्हें यह काली अमावस की रात नजर नहीं आ रही?

मत मानो मेरी बात। मेरा काम समझाना था, बाकी अंजाम के लिए तैयार रहना जिसके सिर्फ तुम लोग ही जिम्मेदार होंगे।" यह कहते ही वो औरत जोर जोर से हंसने लगी।

तभी हर्षित बोला- "हम रामलीला देख कर ही रहेंगे। तुम चाहे कुछ भी कह लो, हम तुम्हारी बात नहीं मानेंगे।"

"चट्टाकsssss"

इस थप्पड़ की आवाज से वहां वातावरण गूँज उठा। वह थप्पड़ उस औरत ने हर्षित के गाल पर लगाया था। उसके गाल पर पांचों उँगलियों के लाल निशान उभर आये थे।

अचनाक उसके ऐसे बर्ताव को देखकर हम तीनों ही घबरा गए और वहां से पड़ोस के गांव की तरफ भाग खड़े हुए। मुश्किल से उस जगह से लगभग 20-30 कदम भागे ही थे कि हमे हमारा कुत्ता जैकी भी मिल गया। जैकी के मिलते ही जैसे ही मैंने टार्च का प्रकाश उस दिशा की तरफ किया जहां हमे वो रहस्मयी औरत मिली थी। हमारी आंखे फटी की फटी रह गयी। वहां कोई भी शख्स नहीं दिख रहा था। अब हमलोगों ने आव देखा न ताव, हमलोग सिर पर पैर रख कर भागे। 5 मिनट में हीं हमलोग रामलीला वाले स्थल पर पहुँच गए।

"सबहि राम प्रिय जेहि विधि मोहि। प्रभु असीस जनु तनु धरि सोहि।।

बिप्र सहित परिवार गोसाईं। करहिं छोहु सब रौरिहि नाईं ।।"

'सभी को श्रीरामचंद्र वैसे ही प्रिय हैं। जैसे वो मुझको हैं।[उनके रूप में] आपका आशीर्वाद ही मानो आपका शरीर धारण कर के शोभित हो रहा है। है स्वामी! सारे ब्राहमण, परिवार सहित आपके ही समान उनपर स्नेह करते हैं।।

रामलीला स्थल पर यह यह आते ही हमलोगों के जेहन से सारे डर और वो खौफ काफूर हो गए। हम तीनों ने सारा ध्यान मंच पर केंद्रित कर दिया। हम तीनों एक साथ ही बैठे थे। बाहर से तो बिल्कुल ऐसे दिख रहे थे मानो जैसा कुछ हूआ ही ना हो। लेकिन रह रह कर हमलोगों का ध्यान उस घटना पर जा रहा था कि वो औरत उतनी सुनसान जगह पर इतनी रात को क्या कर रही थी? आखिर वो औरत ऐसा क्यों कहा रही थी? वो हमलोगों को वापिस जाने के लिए क्यों मजबूर कर रही थी? वो किस अन्जाम को भुगतने के लिए कह रही थी? आखिर ऐसी क्या बात थी जो हर्षित के गाल पर तमाचा रशीद करना पड़ गया? इस तरह के सवालों ने मेरे जेहन में उठा पटक

कर रखा था। हम सभी को आंखे तो मंच पर थी लेकिन दिमाग अभी भी वहीं सड़क के किनारे सफेद साड़ी वाली उस रहस्मयी औरत पर ही थी।

"उठो...उठो हृदान उठो" ये आवाज जानी पहचानी सी लगी। फिर थोड़ी देर में आवाज आई।

"अरे उठेगा भी या हमलोग जाए।" ये आवाज आदित्य की थी और मुझे पूरी ताकत से हिलाते हुए बोला था।

जब मैंने आंखे खोली तो चारो तरफ घनघोर अंधेरा था। हम तीनों के अलावा वहां कोई भी मौजूद नहीं था। हर्षित अपनी आंखों को मल रहा था और जम्हाई ले रहा था।

मैं एक झटके से उठ गया। मैंने कहा-अरे ये क्या हुआ। यहां के सभी लोग किधर गए।

आदित्य ने अपनी हाथ की घड़ी की तरफ इशारा करते हूए बताया- "भाई इस वक़्त रात के 12:30 बज रहे हैं और रामलीला का आज का अंक खत्म हूए लभगभ 2 घंटे हो चले हैं। हम तीनों सो गए थे। वो तो भला मानो कि मेरी आँखें अभी खुल गई।"

इतना सुनते ही हर्षित की नींद पूरी तरह छू मन्तर हो गई। उसने भी अपनी आंखों की पुतलियां चारो तरफ घुमाई और बोला-" क्या कहा हम लोगों को सोते हुए 2 घण्टे से भी अधिक समय हो गया तो फिर यहां के लोगो ने हमे उठाया क्यों नहीं?"

उसकी बातें सुनकर मैं बोला-"भाई हमलोग रामलीला अपने गांव में नहीं देख रहे! पता है ना, हमलोग दूसरे गांव आए हैं? यहां के गांव वाले हमे नहीं पहचानते। उन्होंने देखा भी होगा तो इसी गांव के है जब उठेंगे चले जायेंगे, ऐसा सोच कर हमें छोड़ दिया होगा।"

दोनो मेरी इस बात से सहमत हो गए। उनके चेहरे पर अब घबराहट के बादल दिख रहे थे। मैं बोला- "इस से पहले की हमारे घरवालें हमलोगों को ढूंढते ढूंढते यहां आ जाएं हमें यहां से निकल जाना चाहिए।"

यह सुनकर सभी ने अपनी अपनी मुंडी हिला हिलाकर हॉमी भरी। मेरा कुत्ता जैकी भी वहीं बैठा हमलोगों के घर वापिस जाने जाने कब से इंतजार कर रहा था।

हम तीनों एक झटके से बढ़ चले। सभी के दिल मे घबराहट और बैचैनी थी। जैकी इस बार आगे आगे चल रहा था जैसे उसे घर पहुँचने की जल्दी हमलोगों से ज्यादा हो। अभी कुछ देर चले ही थे

कि मेरे दिमाग में एक योजना कौंधी। मैं बोला-"अरे सुनो क्यों न हम खेत से होते हूए चले। वहां से हम मात्र 10-15 मिनट में ही पहुँच जाएंगे। बस रास्ते मे एक फुलवारी(बगीचा) को पार करना होगा।"

"हम्म्म ये सही रहेगा। कुछ भी करो बस मुझे घर जल्दी पहुँचना है अब।" हर्षित चिंता के स्वर में बोला।

"ले...लेकिन मैंने सुना है कि वहां एक...बिना खोपड़ी का शैतान रहता है। जो किसी को रात के वक़्त इधर से निकलने नहीं देता।" आदित्य ने चेतावनी देते हुए कहा था।

"क्या बेकार की बातें करते हो। भला इतनी रात को कोई वहां क्या करेगा। रात को तो फुलवारी का चौकीदार भी नहीं रुकता वहां। मैं तो कहता हूं कुछ आम वाम खाते चल लेंगे।" मैंने बुलन्द आवाज में कहा।

"हाँ ये सही रहेगा हृदान। उधर से जल्दी पहूँच जाएंगे। आम के आम अजर गुठलियों के दाम।" हर्षित के इतना कहते ही सभी एक साथ हंस पड़े और खेत के पगडंडियों से होते हुए आगे बढ़ चले।

पांच मिनट चलते ही हम फुलवारी के पिछले वाले हिस्से पर जा पहूँचे। फुलवारी एक फुटबॉल के मैदान के जितना बड़ा था। फुलवारी के चारो तरफ विशालकाय पेड़ था औऱ चारो तरफ ऊंची ऊंची कंटीली झाड़ियों से घिरा हूआ था। हमे अंदर घुसने का रास्ता नहीं मिल रहा था। हम सभी के चेहरे उतर गए थे। लेकिन थोड़ी देर तक मश्क्कत करने के बाद अन्दर जाने के लिए एक रास्ता दिखा। उन रास्ते को देख कर लगा कि जंगली जानवर अंदर घुसने के लिए इसका प्रयोग करते होंगे और उनके अक्सर आने जाने से एक छोटा सा रास्ता बन गया था जिसे बैठ कर आसानी से घूंसा जा सकता था। आदित्य टार्च से प्रकाश दिखा रहा था। सबसे पहले मैं घूंसा। मेरे घूंसते ही जैकी भी घूंस गया। फिर बारी बारी से हर्षित और अंत मे आदित्य भी घूंस गया।

हम लोग अब फुलवारी के अंदर थे। अब हमलोगों के चेहरे पर कुछ सुकून था। अंदर चारो तरफ अंधेरा था। कुछ भी साफ साफ नहीं दिख रहा था। चारो तरफ ऊंचे ऊंचे पेड़ थे। लगभग हर तरह के फलों और विविध पुष्पों की खुसबू हवा के संग संग बह रही थी। कहीं आस पास से ही हरश्रृंगार

पेड़ की मनमोहक खुसबू आ रही थी। जिसे सूंघने पर ऐसा लग रहा था कि कुछ देर रूक कर उसका आनंद लें। हवा भी तेज चल रही जिस से पेड़ की पत्तियों से भी अजीब-अजीब तरह की आवाजें आ रही थी। आदित्य फुलवारी के दूसरी तरफ जाने के लिए टार्च से रास्ता तलाश करते हुए आगे बढ़ा। हम दोनों भी उसके साथ हो चले। चलते-चलते हम लोग एक कुआं के पास पहूँचे। वह कुआं फुलवारी के ठीक बीचों बीच था। कुआँ के पास पहूचंते ही अचनाक हमे मौसम में गिरवाट महसूस हूई। अब पहले के मुकाबले ठण्ड का ज्यादा एहसास हो रहा था। तभी अचानक जैकी कुएं की तरफ मुंह कर के जोर-जोर से भौंकने लगा। अचनाक उसके इस बर्ताव ने हम सभी को अचम्भे में डाल दिया। इस से पहले की मैं कुछ बोलता आदित्य बोल पड़ा-"वो...वो रहा बाहर निकलने का रास्ता। इसे पार करते ही केवल 2 मिनट में हम अपने गांव में होंगे।"

अभी हमलोगों ने कुछ कदम आगे बढ़ाया ही था कि पूरा फुलवारी ठहाके से गूंज उठा। ये आवाज इतनी कर्कश थी कि हम तीनों ने एक दूसरे को बिल्कुल जोर से पकड़ लिया। जैकी भी बहूत जोर जोर से भौंक रहा था। आदित्य ने जैसे ही टार्च की रौशनी उस भयावह हंसी की तरफ किया। सभी के सभी जोर जोर से डर कर कांपने लगे। सामने एक शैतान घोड़े पर सवार था जिसके हाथ मे तलवार जैसा कोई औजार था लेकिन सबसे अजीब की बात तो यह थी कि इसका सिर तो था ही नहीं। उसका केवल धड़ था, सिर का नमो-निशान नहीं था। हम तीनों की ये हालात थी कि हमारे हाथ पांव कांपने लगे थे। समझ मे नहीं आ रहा था कि अब क्या करे? हमलोग बुरी तरह फंस चुके थे। बाहर निकलने का एक मात्र रास्ता था जहाँ वो पिशाच घोड़े के ऊपर वो तलवारनुमा औजार ले कर बैठा था और जोर जोर से दहाड़ मार के हंस रहा था। तभी आदित्य ने कहा-"देखा मैंने तुमलोगों को यहाँ घूंसने से पहले ही आगाह कर दिया था। लेकिन तुमलोगो ने मेरी बात को मजाक में ले लिया था। मुझे इतनी जल्दी नहीं मरना। तुमलोग अंजाम भुगतने को तैयार रहो।" ऐसा कहकर उसने अपना हाथ छुड़ाया और बाहर जाने वाली द्वार की तरफ बढ़ चला।

अचनाक उसकी इस हरकत ने हमें और भी शंशय में डाल दिया। अब मुझे लगने लगा था कि इन सभी के मौत का जिम्मेदार मैं होऊंगा। मुझे जल्द ही कोई तरकीब निकाल कर इन सभी को सही सलामत बाहर निकालना होगा। मैं इसी उधेड़बुन में लगा था कि क्या किया जाए।

तभी हर्षित बोला-" वो रहस्मयी औरत याद है ना? उसने हमें पहले ही चेतावनी दी थी कि वापिस चले जाओ, नहीं तो अन्जाम भुगतने के लिए तैयार रहना।" इतना कहते ही वो फफक फफक कर रो पड़ा। मेरी समझ मे नहीं आ रहा था कि मैं आदित्य को समझाने के लिए जाऊं या हर्षित को

चुप कराऊँ। चूंकि हर्षित मेरे पास में ही था इसलिए मैंने हर्षित के काँधे पर हाथ रखा और उसको समझाते हूए बोला- "देखो यह समय रोने धोने का नहीं है। इस वक़्त हमे समझदारी से काम लेना होगा। मेरा यकीन करो मैं तुम सभी को यहां से बाहर सुरक्षित बाहर निकालूंगा।" मेरी इस दिलासे का उसपर कोई असर नहीं हूआ। मैंने मन ही मन अपने इष्ट देव भैरों बाबा को मन ही मन याद किया औऱ उनसे मदद मांगीं।

उधर आदित्य फुलवारी से बाहर जाने वाले द्वार से बस कुछ कदम के फासले पर ही था की अचानक वो बिना सिर वाला शैतान उसको सामने प्रकट हो गया। वो बिना सर वाला शैतान बिल्कुल हमलोगों के सामने अपने घोड़े के साथ खड़ा था जिस पर वो तलवारनुमा औजार ले कर बैठा था। उस औजार से रक्त की बूंदे टपक रही थी। उस औजार को उठा कर जैसे ही उसने आदित्य के ऊपर प्रहार करने के लिए ऊपर की तरफ हाथ उठा कर प्रहार करने जा रहा था तभी अचानक जैकी उस पर उछल पड़ा। जैकी के उस शैतान पर उछलते ही वो अदृश्य हो गया। हमलोगों को यह देख कर बड़ी खुशी हुई। लेकिन हमारी ये खुशी ज्यादा देर तक न टिक सकी।

मैंने जल्दी से ही हर्षित का हाथ पकड़ा और उसको लेकर आदित्य की तरफ पहूँच गया। फिर मैंने आदित्य का हाथ भी पकड़ा और उनको ले कर फुलवारी से बाहर निकलने वाली द्वार की तरफ चल पड़ा की तभी वो शैतान अचनाक एक बार फिर से अब हमलोगों के सामने खड़ा था। उस शैतान ने अपने उस औजार को उठाया और जैसे ही फिर से प्रहार करने को तैयार था की तभी अचानक फिर जैकी आया और उस पर झपट पड़ा। जैकी के झपटते ही वो शैतान एक बार फिर से अदृश्य हो गया। मै इतना देखते ही सब समझ गया कि मुझे अब आगे क्या करना है। मैंने हर्षित औऱ आदित्य से कहा कि कोई भी किसी का हाथ न छोड़े और हमे जैकी के पीछे रहते हूए आगे बढ़ते जाना है। हम तीनो ने ऐसा ही किया और एक दूसरे का हाथ इतनी मजबूती से पकड़ लिया जैसे फ़ैवीकोल का जोड़ हो। हम जैसे जैसे आगे बढ़ते वो शैतान प्रकट हो जाता। जैकी भी हार मानने वालों में से नहीं था वो भी बार बार उस शैतान पर उछल पड़ता। काफी मशक्कत करने के बाद हमलोग फुलवारी से निकलने वाले द्वार से बाहर निकल चुके थे। हमारे बाहर निकलते ही वो घटना भी बंद हो गई। मैंने मन ही मन अपने इष्ट देव को हाथ जोड़कर उनका तहदिल से शुक्रिया अदा किया। हम तीनों जैकी पर अचानक झपट पड़े और उस पर बेशुमार दुलार करने लुटाने लगे। आज उस पर बहूत प्यार आ रहा था हम तीनों को। थोड़ी देर दुलार करने के बाद हमलोग घर मे पहुँच गुए थे। आदित्य उस रात हमलोगों के साथ मेरे घर पर ही रुक गया था।

शाम को आदित्य हमारे घर आया और उसने कहा कि मुझे कुछ ज़रूरी बात करनी है। ऐसा कह कर वो हम लोगो को समोसे खिलाने की बात घर मे बोलकर सड़क की तरफ ले गया।

वहां पहुँच कर जब फुलवारी की तरफ नजर गई तो दिन में भी फुलवारी बहुत ही डरावनी लग रही थी।

वो इतनी ज्यादा घनी थी कि सूरज का प्रकाश भी अंदर जाने में सक्षम नही थी। समोसे की ठेली पर जाते ही आदित्य ने बताया कि-"जानते हो जो कल कल रात बिना खोपड़ी वाला शैतान मिला था कौन था वो?"

मैंने कहा- "नहीं तो लेकिन तुझे कैसे पता कि कौन था वो?"

आदित्य बोला- "यह बात लगभग 150 वर्ष पहले की है। राजा देवेन्द्र प्रताप का बोलबाला था। वो बहूत ही बड़े और प्रतापी राज थे। इस गांव को मिलाकर पूरे 150 गांव उनके आधीन थे। जिस फुलवारी में हमलोग कल गए थे एक जमाने मे वो बहूत बड़ी और घनी हूई करती थी। उसकी रक्षा राजा का एक खास सेवक करता था। जिसका नाम जंग बहादुर सिंह था। जो कि बहूत ही बलशाली और पराक्रमी हूआ करता था। दूर दूर तक उसकी ख्याति फैली हूई थी। उसने पूरी ज़िंदगी उस फुलवारी की रक्षा करने का प्रण लिया था। वो राजा के सभी कामो को अपना दायित्व मानकर करता था। परंतु एक रात उनकी किसी ने धोखे से उसके पीछे से आकर उसके सिर को उसके धड़ से अलग कर दिया। कहते है कि सिर धड़ से अलग होने के बाद सिर तो वहीं धरती पर गिर गया लेकिन इसके बावजूद उसने उस व्यक्ति को मार गिराया था और लड़ते-लड़ते वो फुलवारी के उसी क़ुआँ में गिर पड़ा था। जंग बहादुर सिंह अचानक उस हमले को तैयार नहीं था, कहते हैं वो आज भी उस फुलवारी की रक्षा करना अपने दायित्व मानता है। इसलिए रात के दूसरे प्रहर में वो इस गांव के काफी लोगो को दिखा है। उसके बारे में यहाँ गांव में हर लगभग हर किसी को पता है। गाँव मे तो साफ साफ हिदायत दी हूई है कि रात के 8 बजे के बाद उस तरफ जाना मना हैं। यहां तक कि वहां के चौकीदार शिवमंगल लाल भी वहां रात के 8 बजे के बाद नहीं रुकता। वहां कई अप्रिय घटनाएं हो चुकी हैं कहते हैं कि वो फुलवारी आज भी शापित है।"

मैं बोला- "वो सब तो ठीक है लेकिन वो औरत कौन थी जो कल हमें रामलीला देखने जाने से रोक रही थी। इन सब घटनाओ के होने के बाद तो ऐसा लग रहा है जैसे वास्तव में उसे होने वाले घटनाओ का पूर्वनुमान था।"

आदित्य बोला- "बिल्कुल सही कहा तुमने वो औरत सच मे हमारा भला करना चाहती थी। वो इस गाँव की कूलदेवी है जो हमारे गांव की लोगों की वर्षों से रक्षा करती आ रही है। बहुत से लोग उसे वनदेवी के नाम से भी बुलाते हैं।"

हर्षित बोला- "लेकिन तुम्हें तो कल तक कुछ भी पता नहीं था, आज अचनाक कहाँ से सब याद आ गया?"

आदित्य बोला- "मैंने कल रात वाली घटना मेरे यहाँ काम करने वाले माली रामू काका को बताया तो उसने मुझे सारी बात विस्तार से समझाया, इतना ही नहीं वो चौकीदार शिवमंगल माली काका का ही बेटा है। माली काका ने मेरी मुलाकात उस चौकीदार शिवमंगल से करवाई और उन्होंने ही यह बताया कि रात 8 बजे के बाद वहां अनहोनी घटनाएं होती रहती हैं, तरह तरह की आवाजें आती रहती हैं इसलिए कोई भी 8 बजे के बाद न तो फुलवारी में जाता है ना ही कोई उसकी देखभाल के लिए रुकता है।"

आदित्य के बताते ही हमलोगों के आंखों से वो धुन्ध हट गया था जो कल रात से हमलोगों के लिए पहेली बना हूआ था। कल जो बिना सिर वाला शैतान हमे मारने के पीछे पड़ था आज इसके लिए मेरे मन मे जंग बहादुर के लिए श्रद्धा उमड़ रही थी।

उस रात की ख़ौफ़ हर किसी के जेहन में आज भी ताजा है। इतिहास ने अपने गर्त में ना जाने कितनी ही पहेलियाँ और रहस्यों को समेटे हूए हैं। उस रात की घटना को हमलोग आज तक नहीं भूल पाए हैं। आज भी जब हम तीनों गांव जाते हैं तो उस घटना का जिक्र करते हैं तो रौंगटे खड़े हो जाते हैं।